आज चर्च में एक आम गलतफहमी यह है कि पवित्र जीवन जटिल और लंबी धार्मिक नियमों की सख्त पालना करने जैसा है। ऐसा लगता है, जैसे पवित्रता का मतलब हो कानूनी नियमों के आधीन होना—यह एक तरह की आध्यात्मिक गुलामी है। लेकिन शास्त्र एक बिल्कुल अलग तस्वीर दिखाती है। बाइबिल स्पष्ट रूप से कहती है कि “क्योंकि हम नियम के अधीन नहीं, बल्कि कृपा के अधीन हैं।” (रोमियों 6:14, HCB) और हमारी धार्मिकता कर्मों से नहीं, बल्कि मसीह यीशु में विश्वास से आती है। (इफिसियों 2:8–9, HCB)

फिर भी यह गलत नजरिया बना हुआ है, और कई लोग पवित्रता को एक असंभव मापदंड मानते हैं—एक ऐसा लक्ष्य जो केवल आध्यात्मिक तपस्वियों या कठोर अनुशासन वाले लोगों को ही मिल सकता है। लेकिन हो सकता है कि पवित्रता वास्तव में नियमों का पालन नहीं हो? क्या यह एक परिवर्तित हृदय की स्वाभाविक प्रतिक्रिया हो सकती है?

वैधतावाद से परे पवित्रता को समझना

कुछ जीवंत उदाहरण देखें:

अगर आप गलती से गर्म आग को छू लेते हैं, तो सहज रूप से हाथ पीछे खींच लेते हैं—किसी नियम की याददाश्त से नहीं, बल्कि आपके शरीर के सुरक्षात्मक

स्वाभाविक रिफ्लेक्स से।
अगर कुछ तेज़ी से आपकी आँखों के पास उड़कर आता है, आप बिना सोचे-समझे पलक झपकाते हैं।
डर लगते ही हृदय की धड़कन बढ़ जाती है।

ये प्रतिक्रियाएँ कोई चेतन निर्णय नहीं हैं; बल्कि संरक्षित हार्डवेयर का स्वाभाविक काम है। ये नियमों की स्मरण शक्ति से नहीं, आपके शरीर के डिजाइन से संचालित होती हैं।

उसी तरह, जब कोई विश्वासी सच्चाई में पुनर्जन्मित होता है और पवित्र आत्मा से पूर्ण होता है, तो पवित्रता स्वाभाविक आध्यात्मिक प्रतिक्रिया बन जाती है—not बोझिल कर्तव्य।

भीतर की परिवर्तनशीलता की फ़लस्वरूप पवित्रता

सच्ची पवित्रता वैधतावाद नहीं है—यह एक बदली हुई प्रकृति का प्रमाण है। यीशु ने कहा:

“एक अच्छा वृक्ष खराब फल नहीं दे सकता, और न ही एक खराब वृक्ष अच्छा फल दे सकता।” (मत्ती 7:18, HCB)

जिसका मतलब है कि हमारा बाहरी कार्य हमारी आंतरिक प्रकृति से निकलता है। जब पवित्र आत्मा एक विश्वासी के भीतर निवास करता है, तो वह मसीह के स्वभाव के गुण उत्पन्न करता है—ये अवांछित व्यवहार नहीं बल्कि उनके उपस्थिति की उपज हैं:

“परन्तु आत्मा का फल है: प्रेम, आनन्द, शान्ति, धैर्य, भलाई, कृपा, विश्वास, कोमलता, आत्मसंयम।” (गलातियों 5:22–23, HCB)

इसीलिए पवित्रता का अर्थ और नियम नहीं जारी करना है, बल्कि परमपवित्र आत्मा को और अधिक विनम्रता से आत्मसमर्पण करना है।

आपराधिक प्रवृत्ति नहीं, अपील से प्रेरित

एक आत्मा-पूरीत विश्वासी पाप से डर या कर्तव्य से नहीं भागता, बल्कि इसलिए भागता है क्योंकि उसकी आंतरिक प्रकृति उस पाप से घृणा करती है। पौलुस रोमियों 7:22–23 (HCB) में बतलाते हैं:

“क्योंकि मैं, भीतर के मनुष्य के अनुसार, ईश्वर के नियम का आनंद लेता हूँ; परन्तु मैं अपने अंगों में और एक अन्य नियम देखता हूँ जो मेरे मन के नियम के विरुद्ध युद्ध कर रहा है…”

जब कोई सचमुच यीशु में चलता है, तो पापी वातावरण राहतदायक नहीं लगता। अफवाहें वैसी ही अप्रिय होती हैं, जैसे गंध। यह वैधतावाद नहीं, बल्कि नवीन प्रकृति का कार्य है।

पवित्रता और पवित्र आत्मा का कार्य

पवित्र जीवन पवित्र आत्मा की अभिषेक के बिना संभव नहीं है। यीशु ने अपने चेलों को कहा:

“परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम शक्ति पाओगे,
और तुम मेरे साक्षी बनोगे…” (प्रेरितों के कार्य 1:8, HCB)

यह शक्ति हमें पाप का विरोध करने और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन जीने में सक्षम बनाती है। तीतुस 2:11–12 (HCB) कहता है:

“क्योंकि सभी मनुष्यों के उद्धार देनेवाली ईश्वर की कृपा प्रकट हुई, वह हमें शिक्षा देती है कि जब हम अनर्थ और सांसारिक इच्छाओं का निंदा करके आज के युग में संयम, धार्मिकता, और परमभक्ति से जीवन बिताएँ।”

कृपा केवल हमें बचाती नहीं है; वह हमें सिखाती है और हमें धर्मी जीवन जीने की शक्ति देती है। इसलिए पवित्र जीवन ग़्रक्षा से शुरू होकर उसमें प्रवाहित होता है—किसी औपचारिक सूची में।

कुछ लोगों के लिए पवित्र जीवन क्यों कठिन है

मूल कारण होता है उद्धार की गलत समझ। कई लोग सोचते हैं विश्वास में कोई वास्तविक आत्मसमर्पण नहीं चाहिए, बिना पश्चाताप के, बिना आत्मा भरने के भी बचना संभव है। लेकिन यीशु स्पष्ट कहते हैं:

“यदि कोई मुझमें चलना चाहता है, वह अपना स्वयं का त्याग करे, अपना-क्रूस उठाए और प्रतिदिन मेरे पीछे चले।” (लूका 9:23,
HCB)

यदि आप आत्मा के फल चाहते हैं, तो आपको मांस का त्याग करना होगा। यीशु कहते हैं:

“मैं जो भी डाल हूँ, वह फल नहीं देता, वह ले लिया जाता है; और
वह हर डाल जो फल देता है, उसे वह साफ करता है, कि वह और अधिक

फल दे।” (योहन 15:2, HCB)

पवित्रता आंशिक समर्पण नहीं जानती—नहीं, आप 1% परमेश्वर को दे सकते हैं और शेष 99% संसार को रख सकते हैं और फिर भी आध्यात्मिक जीत की उम्मी कर सकते हैं।

पवित्रता: स्वेच्छा से, न कि बाध्यात्मक

जब पवित्र आत्मा आपको भर देता है, पवित्रता आपकी लालसा बन जाती है। आप पाप से इसलिए दूर रहेंगे क्योंकि आपका आत्मा नहीं चाहता, न कि केवल क्योंकि नियम कहता है।

भगवान ने कहा पीओ मत (इफिसियों 5:18), पर आप भी नहीं पीते—क्योंकि अब आपको इच्छा नहीं होती।
यौन पाप से बचना केवल उसके लिखावट से नहीं, बल्कि आपकी आत्मा में उस आनंद की
कमी से होता है।
घमंड या अफवाह से बचना केवल उसके वर्जन के करण नहीं, बल्कि आपके हृदय की घृणा के कारण है।

यह सब आत्मा का कार्य है, कानून का नहीं।

आध्यात्मिक वास्तविकताएँ आत्मिक दृष्टि से जानी जाती हैं

पौलुस लिखते हैं:

“क़ुदरती मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता; क्योंकि वह उसके लिए मूर्खता है … क्योंकि उसे आत्मिक रूप से जाना जाता है।” (1कोरिन्थियों 2:14, HCB)

केवल जो आत्मिक रूप से पुनर्जन्मित होते हैं, वास्तव में यह पहचान पाते हैं कि पवित्रता किसी जाल नहीं, बल्कि स्वतंत्रता है। जैसा कि यीशु ने कहा:

“और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।”
(योहन 8:32, HCB)

कुल आत्मसमर्पण की पुकार

यदि आप पवित्र जीवन जीना चाहते हैं, तो यह शुरू होता है पूर्ण आत्मसमर्पण से—सिर्फ विश्वास नहीं, पूर्ण जीवन! इसमें शामिल हैं:

1. ज्ञात पापों की ओर से पश्चाताप (प्रेरितों के कार्य 3:19)
2. यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता मानकर विश्वास करना (रोमियों 10:9–10)
3. पापों की क्षमा के लिए जल-विमर्श (प्रेरितों के कार्य 2:38)
4. पवित्र आत्मा को स्वीकार करना, जो आपको एक विवरित जीवन जीने की शक्ति देता है (प्रेरितों के कार्य 19:2)

जब आप यह पूरा मनोबल रखते हुए करते हैं, तो पवित्रता बोझ नहीं—बल्कि आनंद बन जाती है:

“क्योंकि उसका आज्ञा कठोर नहीं है।” (1यूहन्ना 5:3, HCB)

अंतिम प्रेरणा

आप अब पाप और असफलता की गुलामी में नहीं रहना चाहते। पवित्रता का अर्थ नियमों से संघर्ष नहीं है, बल्कि आत्मा में चलना है। यीशु आपका “सब कुछ” बन जाए, तो संसार आपकी पकड़ खो देगी:

“आत्मा में चलो, और तुम मांस की वासनाओं को पूरा नहीं
करोगे।” (गलातियों 5:16, HCB)

आज ही निर्णय लें: अपना-आपको नकारें, अपना-क्रूस उठाएं, और यीशु का पूरा अनुसरण करें। आप चमत्कारिक शक्ति, शांति और स्वतंत्रता अनुभव करेंगे—नियमों से नहीं, बल्कि कृपा से।

प्रभु आपकी समृद्धि करें और आपको अपने आत्मा से पूर्ण करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp